ISSN 0975-119X

OUR PUBLICATIONS

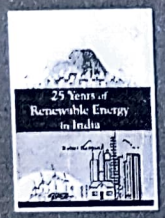

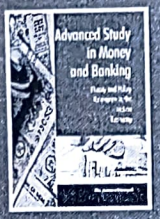

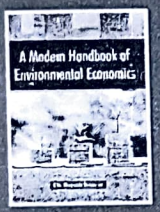

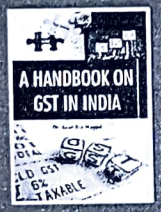

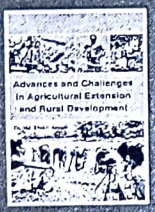

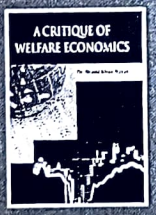

Globus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 13 अंक 2 मार्च-अप्रैल 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

प्रो. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 13 अंक : 2 ❑ मार्च-अप्रैल, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:
448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 40564514, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

इस अंक में

जयशंकर प्रसाद जी का जीवन दर्शन–शशि कपूर; डॉ० अजय मिश्र 1
नागार्जुन के काव्य में सामाजिक वर्ग चेतना का स्वरूप–विनोद कुमार; डॉ० अजय मिश्र 4
हिन्दी साहित्य में गीतों का संवेदना पक्ष–मोहन बैरागी; डॉ० अवनिश अस्थाना 8
प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020–अभिषेक सिंह; डॉ० श्रीप्रकाश मिश्र 13
आधुनिक समाज-दृष्टि और निर्गुण काव्य–हेमंत कुमार 16
'दृश्य से अदृश्य का सफर में व्यक्त मनोवैज्ञानिकता'–प्रो० शर्मिला सक्सेना 19
प्राचीन भारत में दण्ड-व्यवस्था का स्वरूप–कुंवर विक्रम सूर्यवंश 23
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित स्त्री–डॉ. राम किशोर यादव 27
भारत में पंचायती राज व्यवस्था: एक समीक्षात्मक अध्ययन–अरूण कुमार 31
संवेगात्मक परिपक्वता के सन्दर्भ में किशोरावस्था के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन–डॉ० अविनाश पाण्डेय 35
भारतीय शिक्षा में वेदों का महत्व–डॉ० भगवानदास जोशी 40
भारतीय स्वतंत्रता क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं का योगदान–डॉ. वाय. एम. साळुंके 44
भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और महात्मा गांधी–मुकेश चन्द्र 47
भारत में दिव्यांगकता का सामाजिक अध्ययन–डॉ० खोमन लाल साहु; डॉ० अश्वनी महाजन 50
द्विवर्षीय बी. एड. पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन रायपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में
–प्रियंका तिवारी; डॉ० प्रियंका रमेशराव डफरे 55
ओटीटी प्लेटफार्म की विषय वस्तु का उपयोग एवं संतुष्टि- सिरसा शहर के सन्दर्भ में एक अध्ययन–बेअंत सिंह; डॉ० रविंद्र ढिल्लो 57
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन–ज्योति विजय; डॉ० चंद्रकान्त शर्मा 65
साहित्य के बदलते परिदृश्य एवं संस्कृत-रचना; डॉ० उषा नागर 69
चन्द्रप्रकाश जगप्रिय रो कहानी-साहित्य: कथ्य आरो शिल्प–श्वेता भारती 72
फुर्सत, रचनात्मकता और उत्पादन संबंध–डॉ० ज्योति कुमारी 76
हिमाचल की कहानियों में अवसरवादिता और प्रशासनिक तंत्र में भ्रष्टाचार–डॉ० ममता 79
कक्षा-8वीं के गणित पाठ्यपुस्तक का अधिगम प्रतिफल के संदर्भ में अध्ययन–डॉ० ए० के० पोद्दार; सोनम तम्बोली 83
गोपाल कृष्ण शर्मा 'फिरोजपुरी' व्यक्तित्व एवं कृतित्व–पिंकी दहिया 90
पंचायती राज एवं ग्राम विकास–केदार साहु; प्रोफेसर अश्वनी महाजन 93
नारदीय पुराण और पाणिनीय शिक्षा में वेदांग स्वरूप का समीक्षात्मक अध्ययन–कुमुद कुमार पाण्डेय 97
विकास और राष्ट्रीय एकता में युवा समूह की भूमिका–डॉ० जयराम बैरवा 103
विश्वगुरु के रूप में भारत और नई सदी–डॉ० रामलाल शर्मा 106
कोविड-19 के संदर्भ में उच्च शिक्षा की चुनौतिया–डॉ० श्रीमती गीता शुक्ला 108
आधुनिक काल में हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य का महत्व–रघुनंदन हजाम 112
हमारे लोकप्रिय गीतकार कवि गिरिजा कुमार माथुर–डॉ० आर० के० पाण्डेय; चोवाराम यदु 115
मिथिलांचल की खास पहचान मखाना–डौली कुमारी; सुदीप कुमार 118
अध्यापक की जिजीविषा एवं अस्मिता की नीलामी का साक्ष्य: दीक्षान्त–डॉ. पूजा शर्मा 123
कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' के काव्य में अभिव्यक्त गाँधीवादी दर्शन–कुशल महंत 126
मुगल काल में पशु-पक्षी चित्रण रूअकबर कालीन चित्रकला के विशेष सन्दर्भ में–डॉ० शैलेन्द्र कुमार 129
निराला के काव्य में भारतीय संस्कृति–डॉ० भंवर लाल प्रजापत 132

भारतीय स्वतंत्रता क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं का योगदान

डॉ. वाय. एम. साळुंके

सहयोगी प्राध्यापक, के.आर. टी. आर्ट्स अँड कॉमर्स कॉलेज वणी, जि. नासिक, महाराष्ट्र

युवा भारतीय क्रांतिकारी महिलाओं के नाम क्रांतिकारी विजय में कभी परिलक्षित नहीं हुए, वे हैं जो हर भारतीय महिला को गौरवान्वित करती हैं। रानी गिडालू। वह नागालैंड की उत्तरी कछार पहाड़ियों में रहने वाली एक 13 वर्षीय लड़की है। स्वतंत्रता संग्राम में अपने चचेरे भाई जादोनांग के काम से प्रेरित होकर गिडालू ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में खुद को डुबो दिया। 1931 में जब जादोनांग को फांसी दी गई तो आंदोलन का नेतृत्व गिडालू ने किया था। उसने अपना कार्यालय मणिपुर से एक आदिवासी पहाड़ी इलाके में स्थानांतरित कर दिया। 1931 में, उन्होंने 'सरकार को करों का भुगतान न करें' आंदोलन शुरू किया। तब सरकार ने सार्वजनिक कर लगाया। लोगों के पास से हथियार बरामद गिदालू ने अपना आंदोलन तेज कर दिया। अंग्रेजों ने गिडालू पर कब्जा करने के लिए कई प्रयास किए, लेकिन बहादुर गिडालू बराक नदी के किनारे जंगल से होकर गुजरा, और कभी भी अंग्रेजों के हाथों में नहीं मिला। जिस तरह स्वशासन के आंदोलन में हजारों महिलाएं अहिंसक सत्याग्रह में शामिल हुईं, उसी तरह बहुत सी महिलाएं समर्पित रवैये के साथ सशस्त्र क्रांतिकारी समूहों में शामिल हुईं। पहली बार, जिन महिलाओं ने सतही गतिविधियों में भाग लिया जैसे कि पर्चे बांटना, भूमिगत भोजन करना आदि, धीरे-धीरे आंतरिक गुप्त क्रांतिकारी समूह में शामिल हो गईं। हम ऐसी क्रांतिकारी महिलाओं की समीक्षा कर रहे हैं।

सिस्टर निवेदिता: सिस्टर निवेदिता का जन्म 1867 में नॉर्थ अर्लेट में हुआ था। उनका असली नाम मार्गरेट नोबल था। ईश्वरचरणी ने समर्पित किया जीवन, बचपन से ही सेवा का शौक। 1895 में जब स्वामी विवेकानंद का पहली बार लंदन में साक्षात्कार हुआ, तो निवेदिता के मन में ज्ञान की भावना पैदा हुई। वह विवेकानंद के भाषण से बहुत प्रभावित हुईं। 1896 में स्वामीजी की दूसरी यात्रा के बाद, भगिनी निवेदिता ने भारत आने का फैसला किया था और भारत की सेवा की निर्बाध प्रतिज्ञा स्वीकार की थी। विवेकानंद ने अपनी बहन से कहा, 'भारत से प्यार करो, भारत की सेवा करो' इस समय स्वामी जी ने उनका नाम 'भगिनी निवेदिता' रखा था। विवेकानंद द्वारा दिए गए मंत्र का पालन करते हुए, निवेदिता ने उनके दिल में भारतीय संस्कृति, भाषा, शिक्षा, दर्शन और भारतीय स्वतंत्रता के लिए विश्वास और प्रेम की भावना पैदा की सन्यासिनी निवेदिता 14 साल तक भारत में रहीं और भारतीय समाज में सामाजिक जागरूकता के लिए काम किया। भारतीय महिलाओं को सेवा का पाठ पढ़ाया जाता था। एक महिला के जीवन को ऊपर उठाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भी योगदान दिया। 1902 में, उन्होंने बड़ौदा का दौरा किया और श्री अरविंद के काम को देखा और क्रांतिकारी साहित्य पर अपना बहुमूल्य पुस्तकालय बंगाल रिवोल्यूशनरी फैक्ट्री को सौंप दिया। यह भारत के प्रति उनकी देशभक्ति को दर्शाता है। सिस्टर निवेदिता ने महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक कार्यों में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1905 में, लॉर्ड कर्जन के भाषण के दौरान, उन्होंने विरोध किया और भारतीय स्वतंत्रता की मांग की। वंगभंग आंदोलन में कई राष्ट्रीय कविताएं लिखकर क्रांतिकारियों को प्रेरणा मिली। 1906 में उन्होंने हर घर में जाकर सेवा का काम किया। इस तरह भगिनी निवेदिता ने राष्ट्रीय असहयोग आंदोलन और क्रांतिकारी आंदोलन में बहुत अच्छा काम किया था। उन्होंने अपनी पुस्तकों, लेखन और आलोचनात्मक कार्यों के माध्यम से भारतीय समाज और राष्ट्र की निरंतर सेवा की थी। भगिनी निवेदिता ने जागरूकता बढ़ाकर, महिलाओं को आगे बढ़ाकर और शिक्षा में सुधार करके अपने काम से सभी भारतीयों को अवगत कराया था।

कुमारी प्रीतिलता वड्डेदार: 1830 'चटगांव शस्त्रागार कांड भारत के क्रांतिकारी इतिहास में प्रसिद्ध है। क्रांतिकारी नेता सूर्य सेन और प्रीतिलता वड्डेदार ने ब्रिटिश सैनिकों को जेरिस लाकर आर्तकित करने का काम किया था। क्रांतिकारियों ने गुरिल्ला युद्ध युद्ध का प्रयोग कर अंग्रेजों की शक्ति को कम करने का प्रयास किया था। प्रीतिलता ने कैप्टन केनेरान को गोली मार दी थी और उसे एक बहुत ही साहसिक और साहसी कृत्य से परिचित कराया था। ब्रिटिश सेना ने प्रीतिलता और सूर्यसेन को पकड़ने के लिए अथक प्रयास किया और प्रीतिलता ने भूमिगत रहकर अपना क्रांतिकारी कार्य जारी रखा। सूर्यसेन और प्रीतिलता ने यूरोपीय क्लब पर हमला करने और नृत्य गीत से दंग रह गए अंग्रेजों को गोली मारने की योजना बनाई थी। सूर्यसेन ने इस अभियान को कुछ क्रांतिकारी साथियों के साथ प्रीतिलता को सौंपा था और सूर्यसेन ने कहा, 'यह अभियान सफल होना चाहिए, अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार और अपमानित होने और जहर खाकर शहीद होने से बेहतर है कि किसी का जीवन समाप्त कर दिया जाए। अपने विश्वस्त क्रांतिकारी साथियों के लिए सूर्यसेन का यह अंतिम संदेश था। वह 24 सितंबर, 1932 की एक रोमांचक रात थी। प्रीतिलता ने कल्पना दत्त से पोटैशियम साइनाइड का एक बर्तन लिया और अपने चुने हुए साथियों के साथ क्लब पर हमला करने के लिए बम, बंदूकें, गोलियां आदि हथियार उठा लिए। क्लब में रात में अंग्रेज पुरुष और महिलाएं शराब पी रहे थे और गुस्से में नाच रहे थे। उसी समय, प्रीतिलता ने एक बम विस्फोट किया और इमारत में प्रवेश किया और अंग्रेज पुरुषों और महिलाओं को गोली मार दी। जबकि हर तरफ एक ही दहशत थी, अंग्रेज पुरुष और महिलाएं भाग गए, कुछ घायल हो गए और कुछ अपनी जान बचाने में सफल रहे। जवाबी कार्रवाई में, ब्रिटिश सैनिकों ने प्रीतिलता को गोली मारकर घायल कर दिया। शहादत का समय निकट था। प्रीतिलता ने अपना शरीर अंग्रेजों को देने के बजाय योजना के अनुसार

'पोटेशियम साइनाइट' खाकर शहीद होना पसंद किया। कुमारी प्रीतिलता उस समय केवल 17 वर्ष की थीं। क्रांतिकारी होते हुए भी प्रीतिलता एक महान लेखिका भी थीं। प्रीतिलता के निडर लेखन ने कई कविताओं को जन्म दिया और ये कविताएँ हमेशा क्रांतिकारी सदस्यों के लिए प्रेरणा रही हैं। युवा प्रीतिलता के क्रांतिकारी आंदोलन ने एक गौरवशाली इतिहास रचा। प्रीतिलता वड्डेदार ने युवाओं को हमेशा प्रेरणा देने का बेहतरीन काम किया था।

वीणा दास: 1932 में कलकत्ता कृश्चियन कॉलेज में दीक्षांत समारोह के दौरान, तत्कालीन गवर्नर और कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्टेनली जैक्सन को एक क्रांतिकारी महिला वीणा दास ने सीमेंट हॉल में गोली मार दी थी। ऐसी क्रांतिकारी वीणा दास का जन्म 24 अगस्त 1911 को कृष्णानगर में हुआ था। अपने आदर्शवादी देशभक्त पिता से प्रेरित होकर वीणा के मन में देशभक्ति की हवा चलने लगी। वह एक प्रभावशाली और संस्कारी छात्रा थी। 1928 में, वह साइमन कमीशन का विरोध करने के लिए कॉलेज की लड़कियों में शामिल हो गईं। यहीं पर बिना गुलामों की क्रांति के गुण सभी ने देखे। वह 1930 के चटगांव षडयंत्र में शामिल हो गई थीं और हर जगह क्रांति जोरों पर थी। वीणा दास को दीक्षांत समारोह के समापन पर राज्यपाल पर गोली चलाने के आरोप में ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार किया गया था और उन पर आरोप लगाया गया था। अन्य साथियों का नाम लेने के लिए अत्यधिक दबाव में ब्रिटिश पुलिस द्वारा वीणा के साथ अमानवीय व्यवहार किया गया। फिर भी वीणा ने अपना नाम बताने से इनकार कर दिया। वीणा को नौ साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई थी। अदालत में वीना दास ने अपने इकबालिया बयान में साहसपूर्वक कहा, 'मैंने मातृभूमि की रक्षा के लिए राज्यपाल को गोली मार दी। विदेशी सरकार की हर जगह अन्याय और दमन की नीति के कारण मैं ऐसा अन्यायपूर्ण जीवन नहीं जी पा रही हूँ। देश की सेवा के लिए अपने प्राणों की आहुति देना ही बेहतर होगा। इस तरह से विनम्र और संस्कारी दिखने वाली लड़की ने बहुत ही सरल तरीके से अदालत में कबूल किया था और एक बहुत ही कठोर सजा को स्वीकार किया था। 1937 में बनी प्रांतीय कांग्रेस सरकार के इशारे पर 1939 में वीना दास को जेल से रिहा किया गया। उसके बाद उन्होंने 'वीना दास मंदिरा' अखबार में काम करना शुरू किया। 1942 के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भी वीना दास ने क्रांतिकारी कार्य किए थे। साथ ही उन्होंने युवाओं को क्रांतिकारी प्रशिक्षण देकर गांव में अपनी सेवा जारी रखी। 1946 और 1951 के बीच वीना दास प्रांतीय विधानसभा की सदस्य रहीं। 1946 में जब कलकत्ता में हिंदू-मुस्लिम दंगे हुए, तो उन्होंने अपने अन्य क्रांतिकारी सहयोगियों के साथ दंगों को दबाने और शरणार्थियों को पुनर्वास में मदद करने में मदद की। भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, वीना दास की शादी हो गई। इसके बाद उन्होंने एक श्रमिक नेता के रूप में अपना काम बिताया।

शांति घोष और सुनीति चौधरी: 1930 में प्रसिद्ध चटगांव शस्त्रागार कांड और ढाका पुलिस पोलीस इन्सपेक्टर जनरल लीमॅन की हत्या, दिनदहाड़े पुलिस अधीक्षक हडसन की गोली मारकर हत्या और खान बहादुर अहसानुल्लाह खान की हत्या इस क्रांतिकारी कार्य को करने का साहस शांति घोष और सुनीति चौधरी ने दिखाया था। इस घटना ने ब्रिटिश सरकार को झकझोर कर रख दिया था। समाधान के रूप में अंग्रेजों ने दमन की नीति अपनाई। फिर भी क्रांति ब्रिटिश सरकार के हाथ में नहीं थी। शांति घोष और सुनीति चौधरी के बीच गजब की देशभक्ति थी। दोनों किशोरों ने जिला मजिस्ट्रेट स्टीवंस को मारने की योजना बनाई थी और स्टीवंस को एक पत्र भेजा था। तो स्टीवंस बहुत डरा हुआ था। उनके घर के सामने सख्त पहरा था। पूरी जांच होने तक किसी को भर्ती नहीं किया गया। 24 दिसंबर को दो युवतियां गार्ड तोड़कर स्टीवंस के बंगले में आ गईं। जैसे ही वे फाटक के पास पहुँचे, पहरेदारों ने उन्हें रोका और कहा, श्तुम किसे चाहते हो? शांति और सुनीति ने जवाब दिया, "लड़कियों के लिए तीन मील दौड़ने की प्रतियोगिता है। हमें इस संबंध में जिलाधिकारी की मदद की जरूरत है और हम यहां उनसे सलाह लेने आए हैं। गार्ड ने मिस्टर स्टीवंस से पूछा तो अंदर से एक आवाज आई और कहा, "दो स्कूली छात्राएं हैं, वे नाबालिग हैं, उन्हें अंदर भेज दो।" जब उन्होंने मजिस्ट्रेट स्टीवंस को कागज सौंप दिया और वह हस्ताक्षर करने के लिए झुकने लगे, तो शांति घोष और सुनीति चौधरी ने बिना देर किए मजिस्ट्रेट स्टीवंस पर गोली चला दी। एक साथ दस गोलियों की आवाज से बंगले में अफरातफरी मच गई। सी.आई.डी. जब तक वह पहुंचे, स्टीवंस मर चुका था। दोनों लड़कियां ऐसे मुस्कुरा रही थीं मानो जीत गई हों। जब अधिकारी पहुंचे तो उन्होंने अपनी बंदूकें फेंक दीं और दो नारे लगाए और खुद को पुलिस के हवाले कर दिया। यह एक बहुत छोटे स्कूल की दो युवा लड़कियों द्वारा किया गया था। इस सनसनीखेज और रोमांचक घटना ने पूरे बंगाल और देश भर में तहलका मचा दिया। इन दोनों लड़कियों ने अपना काम पूरा कर लिया था, इसलिए वे जीवन नहीं जीना चाहती थीं। उसे नाबालिग होने के कारण मौत की सजा नहीं दी गई थी। उम्रभर काले पानी की सजा सुनाई गई थी। दोनों लड़कियों ने सजा स्वीकार कर ली थी और जेल जाना पसंद किया था। शांति घोष और सुनीति चौधरी ने अपना पूरा जीवन और युवा भारतीय स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया था। क्रांतिकारी आंदोलन में ये दोनों लड़कियां अमर हो गईं।

चारुशीला देवी: चारुशीला देवी का जन्म 1883 में मिदनापुर में हुआ था। 1905 में जब बंगाल में 'वंग-भंग आंदोलन' और 'स्वदेशी आंदोलन' जोरों पर थे, तब देवी चारुशीला ने खुदीराम बोस को खून का टीला देकर स्वदेशी का मंत्र दिया था। इस प्रकार चारुशीला देवी ने बंगाल में स्वदेशी आंदोलन को तेज करने के लिए अथक प्रयास किया था। 1908 के 'मुजफ्फरपुर बम कांडा' में ब्रिटिश पुलिस ने चारुशीला देवी को पकड़ने के लिए अथक प्रयास किया। लेकिन अंत तक भूमिगत रहकर चारुशिला ने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को जारी रखा और यह अंग्रेजों के हाथ में नहीं आई। 1921 में, चारुशीला ने आंदोलन में युवा महिलाओं को संगठित करने और प्रशिक्षित करने के लिए एक महिला समिति का गठन किया। 1930 के 'मीठ सत्याग्रह' में भाग लेते हुए चारुशीला देवी ने भूमिगत रहकर संगठन के कार्यों को बड़ी ही शिद्दत से अंजाम दिया। उन्हें ब्रिटिश पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और छह महीने के लिए जेल भेज दिया। 1931 में रिहा होने के बाद भी चारुशीला देवी ने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को जारी रखा। उन्हें एक बार फिर गिरफ्तार किया गया और एक राजनीतिक कैदी के रूप में एक महीने तक जेल में रहना पड़ा। 1933 में जब मिदनापुर मजिस्ट्रेट की हत्या कर दी गई, तो पुलिस को उस पर इसमें में शामिल होने का संदेह हुआ और देवी चारुशीला की पूरी संपत्ति को जब्त कर लिया और उसे नीलाम कर दिया। इसके बाद प्रांतीय सरकारों ने अन्य क्रांतिकारियों की तरह चारुशीला देवी को मुक्त कराने का प्रयास किया। इस प्रकार चारुशीला देवी ने स्वदेशी आंदोलन, क्रांतिकारी गतिविधियों और असहयोग आंदोलन आदि जैसे कई स्वतंत्रता संग्रामों में भाग लेकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई।

मृणालिनी देवी: सुविमल राय की पत्नी श्रीमती मृणालिनी देवी ने 1931 में अपने पति के साथ क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय भाग लिया था। सेंट्रल असेंबली में बमबारी के बाद 'सैंडहर्स्ट नरसंहार' हुआ। पंजाब से लेकर बंगाल और मध्य और दक्षिण भारत तक, अंग्रेजों ने क्रांतिकारियों के ठिकाने खोजने

के लिए पुलिस अभियान तेज कर दिया था। वहीं, मृणालिनी देवी के घर की तलाशी के दौरान ब्रिटिश सैनिकों को एक बम मिला था। इस मामले में सुबिमल रॉय और मृणालिनी देवी को गिरफ्तार किया गया था। 'बनारस बम कांड' में पति-पत्नी दोनों को पकड़ा गया और सात साल जेल की सजा सुनाई गई। श्रीमती मृणालिनी देवी का कार्य क्रांतिकारी सिद्धांत का था। देवी मृनाली ने स्त्री होते हुए भी साहस और पराक्रम का परिचय दिया था।

सुनीति देवी: सुनीति देवी कानपुर में श्री चंद्रशेखर आजाद की पार्टी में सक्रिय थीं। सुनीति देवी ने दस्तावेजों, हथियारों के परिवहन, छुपाने, आश्रय बदलने आदि के क्रांतिकारी कार्यों में अथक परिश्रम किया था। चंद्रशेखर आजाद सुनीति देवी के घर पर ठहरे हुए थे। 1934 में ब्रिटिश पुलिस के एक ऑपरेशन के दौरान कुछ सबूत मिलने के बाद सुनीति देवी को गिरफ्तार कर लिया गया था। इस प्रकार सुनीति देवी ने तत्कालीन ब्रिटिश शासन के दौरान क्रांति में बहुत साहसी भूमिका निभाई थी।

माया देवी: माया देवी ने भी कई क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय भाग लिया और भारत माता को ब्रिटिश गुलामी से मुक्त कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। सुनीति देवी की गिरफ्तारी के बाद, मायादेवी को ब्रिटिश छात्रों ने डायनामाइट बनाने के उपकरण के साथ पकड़ लिया और शस्त्र अधि नियम के तहत पांच साल की जेल की सजा सुनाई। जेल में, ब्रिटिश सरकार ने माया देवी को गंभीर रूप से प्रताड़ित किया। इसके चलते उनकी तबीयत बिगड़ गई। माया देवी अपनी मां सुनीति देवी की तरह साहसी और पराक्रमी थीं। वह एक अमीर, उज्ज्वल और बुद्धिमान महिला थी। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी कार्य करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी।

श्रीदेवी मुसद्दी: श्रीदेवी मुसद्दी कई क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय भागीदार थीं। आजाद के क्रांतिकारी कार्यों में चंद्रशेखर ने हमेशा मदद की थी। चंद्रशेखर आजाद को अक्सर ब्रिटिश सैनिकों से बचाया जाता था। श्रीदेवी मुसद्दी क्रांतिकारियों की मदद करने के लिए छह महीने की जेल हुई थी। भारत माता को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने के लिए श्रीदेवी मुसद्दी ने बहुत ही साहसिक कार्य किया था।

शांता और शकुंतला: शकुंतला ने अपने क्रांतिकारी कार्यों में क्रांतिकारियों की कई तरह से मदद की थी। शकुंतला ने गुप्त अभियानों में भाग लेकर, क्रांतिकारियों के पेपर पास करके, गोपनीय रिपोर्ट पास कर चंद्रशेखर आजाद की कई तरह से मदद की थी। शांता ने क्रांतिकारियों की भी मदद की थी। साहसिक प्रदर्शनों ने भगत सिंह को संदेश देने के काम में योगदान दिया था। वह दिल्ली, लाहौर, कानपुर आदि में क्रांतिकारी कार्यों को अंजाम देकर ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थे। वह अक्सर जेल जाती थी। लक्ष्मीदेवी और सावित्रीदेवी: लक्ष्मीदेवी और उनकी बेटी कुमारी सावित्रीदेवी ने क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। क्रांतिवीर भगत सिंह ने अपने क्रांतिकारी कार्यों में कई साहसिक भूमिकाएँ निभाई थीं। लक्ष्मी देवी और सावित्री देवी ने क्रांतिकारियों के गुप्त दस्तावेजों, बंदूकों, बमों आदि की गुप्त जानकारी रख कर क्रांति को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। क्रांतिकारी सहायता कोष जुटाकर क्रांतिकारियों की मदद की गई। लक्ष्मीदेवी और सावित्री देवी ने भारत माता को संकीर्णता से मुक्ति दिलाने के लिए महिलाओं में जागरुकता पैदा कर मोर्चा और सभाओं के माध्यम से आम आदमी को आजादी का महत्व दिया था।

लीलादेवी : लाहौर के प्रसिद्ध नेता लाला पिंडीदास की पुत्री लीलादेवी अपने पिता के कार्यों से प्रभावित होकर क्रांतिकारी आंदोलन में बड़ी हिम्मत दिखाई। क्रांतिवीर भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद को अक्सर साहसिक और गुप्त अभियानों को अंजाम देकर क्रांति में मदद की जाती थी। हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की कार्यकर्ता के रूप में लीलादेवी का कार्य प्रशंसनीय था। जालंधर में लीलादेवी ने क्रान्तिकारियों को गुप्त दस्तावेज पहुँचाने का बहुत ही साहसी कार्य किया था। लीलादेवी ने चंद्रशेखर आजाद के क्रांतिकारी कार्यों और गुप्त अभियानों में भाग लिया था और हथियारों में अपनी कला का प्रदर्शन किया था। लीलादेवी को उनके काम पर कड़ी नजर रखने और क्रांतिकारियों की मदद करने के लिए ब्रिटिश सैनिकों ने गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया था।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पुरुषों के साथ महिलाओं ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ मवाल और जहाल विचारधारा के आंदोलन में योगदान दिया। उसी प्रकार भारतीय स्वतंत्रता क्रान्तिकारी आन्दोलन में जिस प्रकार पुरुष क्रान्तिकारी थे, उसी प्रकार महिला क्रान्तिकारियों ने भी अपने कार्य में सफलता प्राप्त की।

संदर्भ

1. सरकार सुमित, आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, नवी दिल्ली, 1993
2. सुब्रमणियम लक्ष्मी, हिस्ट्री ऑफ इंडिया, ओरिएंट ब्लैकस्वान, नवी दिल्ली, 2010
3. हबीब इरफान, राष्ट्रीय आंदोलन विचारधारा और इतिहास में अध्ययन , सहमत प्रकाशन, 2015.
4. खोबरेकर वि. गा., महाराष्ट्रातील स्वातंत्रलढे, महाराष्ट्र राज्य अणि सांस्कृती मंडळ, मुंबई , 1994.
5. पाटकर रमेशचंद्र,भगतसिंग निवडक भाषणे व लेखन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नवी दिल्ली, 2008.
6. प्रा निकम गौतम, क्रांतिकारक आदिवासी जनायक, जळगाव, 2010.